

सम्मान मांगने से नहीं, अपने
आचरण से कमाया जाता है;
और विश्वास शब्दों से नहीं,
निरंतर अच्छे कर्मों से बनता
है।

03 “आदि शंकराचार्य: अद्वैत की शाश्वत आवाज”

06 पराली की समस्या का वैज्ञानिक समाधान: किसान और विज्ञान साथ-साथ

08 उपक्षित सरायकेला में विधानसभा प्राक्कलन समिति ने विकास योजनाओं का लिया जायजा

परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुंचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुंचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।



जल्द आपके बीच में....

परिवहन विशेष
न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गुंजेगी पूरी दुनिया में
परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर में "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।



संजय बाठला
मुख्य संपादक

परिवहन विशेष - जनता की आवाज / विशेष संपादकीय

भारत देश में पढ़ाई बिज़नेस क्यों ?

जापान, अमेरिका, UK में पढ़ाई फ्री और हमारे यहाँ सरकारी स्कूल बंद - यह कैसा विकास मॉडल ? भारत देश में सबसे महंगी चीज शिक्षा ही क्यों ?

संपादक: संजय कुमार बाठला

एक आम नागरिक का सवाल: देश कोई भी हो, जापान हो, अमेरिका हो, UK हो - वहाँ छोटी क्लास से लेकर कॉलेज तक पढ़ाई फ्री है। वहाँ के सरकारी स्कूल का इन्फ्रास्ट्रक्चर हमारे किसी भी प्राइवेट स्कूल से 10 गुना बेहतर है। तो हमारे देश में पढ़ाई को बिज़नेस क्यों बनाया हुआ है ?

तथ्य और विश्लेषण - 5 बड़े सवाल जो सरकार से पूछे जाने चाहिए:

- सरकारी बनाम प्राइवेट का दोहरा मापदंड: जिस देश में सरकारी स्कूलों का इन्फ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट से 10 गुना बेहतर होना चाहिए, वहाँ सरकारी स्कूल बंद किए जा रहे हैं और प्राइवेट को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- * क्या यह शिक्षा नीति है या बिज़नेस पॉलिसी ?
2. समान शिक्षा का सपना - सब एक स्कूल में क्यों नहीं ? होना तो यह चाहिए - गरीब से अमीर, नेता से

लेकर डॉक्टर तक, सबके बच्चे एक ही स्कूल में पढ़ें, एक ही यूनिफॉर्म हो, एक ही सिलेबस हो, कोई भेदभाव न हो। जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक समानता की बात बेमानी है।

3. फ्री की चीजें जो फ्री होनी चाहिए: देश को आगे ले जाने वाली दो चीजें हैं - पढ़ाई और चिकित्सा - यही दोनों आज सबसे महंगी हैं।
4. खाने-पीने में मिलावट, दवाइयों में मिलावट। हमने सिर्फ एक काम सीखा है - पैसा बनाना है, चाहे इंसान की जान लेकर बने, चाहे बच्चों के भविष्य से खेलकर।
5. टैक्स वसूली पर बारीकी, शिक्षा पर क्यों नहीं ? नेता टैक्स कैसे वसूलना है, इस पर पूरे साल बारीकी से काम करते हैं। अगर उतनी ही बारीकी पढ़ाई की गुणवत्ता और स्वास्थ्य की शुद्धता पर होती, तो आज भारत जापान से आगे होता।
6. डिवाइजन, आरक्षण, फीस - जो नहीं होना चाहिए वही है: जहाँ एकता, समानता और मुक्त शिक्षा होनी चाहिए, वहाँ डिवाइजन है, आरक्षण का राजनीतिकरण है, और आसमान छूती फीस है। बाकी आप खुद सोच सकते हैं।

परिवहन विशेष का निष्कर्ष: यह एक सवाल नहीं, एक चेतावनी है। जिस देश में शिक्षा बिज़नेस बन जाए, वहाँ भविष्य कभी सुरक्षित नहीं होता।

यह एक सवाल नहीं, एक चेतावनी है। जिस देश में शिक्षा बिज़नेस बन जाए, वहाँ भविष्य कभी सुरक्षित नहीं होता।

पढ़ाई बिज़नेस क्यों?

? Japan • USA • UK में पढ़ाई FREE है, हमारे यहाँ सबसे महंगी क्यों?

एक तुलनात्मक सचाई - शिक्षा व्यवस्था का हाल

विदेश: सरकारी स्कूल - मुफ्त शिक्षा

Japan / USA / UK

- 100% FREE - कोई फीस नहीं
- आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर - लैब, लाइब्रेरी, खेल मैदान
- सरकार द्वारा पूर्ण वित्तपोषित

उन्नत शिक्षा | समान अवसर

भारत: निजी स्कूल - बिज़नेस

भारत

- भारी फीस - ₹50,000 से ₹2,00,000/साल
- शिक्षा = मुनाफे का धंधा
- गरीब छात्र बाहर

स्लोगन - गरीब से अमीर, नेता से डॉक्टर तक, सबके बच्चे एक ही स्कूल में पढ़ें

पढ़ाई बिज़नेस नहीं - अधिकार है!

सरकारी स्कूल बंद क्यों? • सरकारी स्कूल बचाओ • शिक्षा को व्यापार मत बनाओ!

Sampadak: संजय कुमार बाठला • परिवहन विशेष • जनहित में जारी •

Email: parivahanvishesh@gmail.com | Website: newsparivahan.com

जनता को तय करना होगा - क्या हमें टैक्स वसूलने वाली सरकार चाहिए या शिक्षा देने वाली सरकार ?

जनहित में सवाल: क्या हमें यही व्यवस्था चाहिए ? फैसला जनता को करना है।

गड्ढा या भ्रष्टाचार? दिल्ली में जर्जर सड़क पर फूटा जन-आक्रोश, युवाओं ने हाथों से उखाड़ कर दिखाई गुणवत्ता

पलाईओवर के नीचे सड़क की पोल खुली, पुलिस बैरिकेड के बीच जनता का सड़क सत्याग्रह

रिपोर्ट: नवदीप सिंह, विशेष संवाददाता, परिवहन विशेष, नई दिल्ली

मुख्य तथ्य: 1. जन-आक्रोश का दृश्य: दिल्ली के एक पलाईओवर के नीचे बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक, युवा और बुजुर्ग एकत्रित हुए। मौके पर दिल्ली पुलिस के बैरिकेड लगे थे। भीड़ में सफेद पगड़ी वाले एक बुजुर्ग व्यक्ति मीडिया के सवालों का जवाब देते नजर आए।

2. मुद्दा क्या है: लोगों का आरोप है कि नवनिर्मित/मरम्मत की गई सड़क कुछ ही दिनों में टूट गई। वीडियो के अंतिम हिस्से में युवा सड़क पर बैठकर हाथों से ही सड़क की बजरी और गिट्टी उखाड़ते दिखे - 'डालो इसके नीचे पत्थर... उठाओ उठाओ' कहते हुए। यह सड़क निर्माण में गुणवत्ता और भ्रष्टाचार पर सीधा सवाल है।

3. परिवहन विशेष का सवाल: क्या यह सड़क सुरक्षा मानकों (IRC) के अनुरूप बनी है? क्या PWD/MCD ने

परिवहन विशेष

SPECIAL REPORT • 5 APRIL 2025 • DELHI EDITION

गड्ढा या भ्रष्टाचार? - दिल्ली में सड़क की पोल खुली

जन-आक्रोश - युवाओं ने हाथों से उखाड़ कर दिखाई सड़क की गुणवत्ता

Reporter: Navdeep Singh Ground Report

Parivahan Vishesh Exclusive

Sampadak: Sanjay Kumar Bathla Parivahan Vishesh

Email: parivahanvishesh@gmail.com | Website: newsparivahan.com

दिल्ली में बढ़त सड़कों को लेकर युवाओं का आक्रोश - कई दिनों से जलमय और गड्ढों से परेशान नागरिकों का प्रदर्शन

थर्ड पार्टी क्वालिटी ऑडिट कराया ? गड्ढों वाली सड़क से दोपहिया वाहन चालकों के लिए जान का खतरा है। रिपोर्टर नवदीप सिंह की टिप्पणी: 'स्थानीय लोगों ने मीडिया को बुलाकर सड़क की हकीकत दिखाई। पुलिस मौके पर शांति व्यवस्था बनाए हुए थी। लोगों की मांग है कि संबंधित

ठेकेदार और अधिकारी पर जांच हो और सड़क का पुनर्निर्माण गुणवत्ता के साथ हो।' परिवहन विशेष की अपील: सड़क केवल डामर नहीं, जनता की सुरक्षा है। संबंधित विभाग को 48 घंटे में इस स्थल की मरम्मत और जांच रिपोर्ट सार्वजनिक करनी चाहिए।

> नोट: यह रिपोर्ट जन-शिकायत और वीडियो साक्ष्य पर आधारित है। संबंधित विभाग का पक्ष आने पर प्रकाशित किया जाएगा।

संपर्क: parivahanvishesh@gmail.com | वेबसाइट: http://newsparivahan.com

स्वाति बाठला का योग महाभियान - पार्क से सड़क, सोसाइटी से मंदिर तक गूँजा योग का जयघोष

जीओ और जीवन दो निःशुल्क योग साधना केंद्र की प्रभात फेरी, पश्चिम विहार में जन-जन को योग से जोड़ें। भारतीय योग संस्थान

लेख प्रस्तुतकर्ता संजय कुमार बाठला प्रधान संपादक परिवहन विशेष

पश्चिम विहार, दिल्ली में योग प्रेरक स्वाति बाठला ने अपने योग शिष्यों के साथ पूरे क्षेत्र का भ्रमण कर जन-जन को योग अपनाने के लिए प्रेरित किया। वीडियो में दिख रही प्रभात फेरी में 'जीओ और जीवन दो' के बैनर तले नारे लगे - करो योग रहो निरोग, घर-घर योग पहुँचाएंगे राष्ट्र को स्वस्थ बनाएंगे, एक घंटा रोज फिटनेस की डोज।

स्थानवार विश्लेषण:

क) पार्क में: सुबह की शुरुआत पार्क से। यहाँ प्राणायाम, सूर्यनमस्कार और ध्यान के लाभ बताए। पार्क में आने वाले वरिष्ठ नागरिक और युवाओं को नियमित योग से शारीरिक लचीलापन और मानसिक शांति का संदेश।

ख) सोसाइटी गेट पर: सहाद्वि, सुप्रिया, अर्वातिका, ग्रीन वैली नैसी सोसाइटी गेटों पर पदयात्रा। हर परिवार को 6 से 7 बजे निःशुल्क योग सत्र में आने का निमंत्रण।

महिलाओं को विशेष भागीदारी। ग) मंदिर प्रांगण में: मंदिर की शांत भूमि में योग और अध्यात्म का संगम। स्वाति जी का संदेश - योग सिर्फ व्यायाम नहीं, जीवन जीने की कला है। तन स्वस्थ, मन शांत, आत्मा प्रसन्न।

घ) सड़कों पर: सड़कों पर हजारों नागरिकों ने प्रभात फेरी में भाग लिया। हाथ जोड़कर, नारे लगाकर पूरे क्षेत्र को गुंजायमान किया।

योग की अनिवार्यता पर स्वाति बाठला जी का संदेश: > "योग से हम स्वयं से जुड़ते हैं। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में 1 घंटा योग अनिवार्य है। इससे बीपी, शुगर, तनाव, मोटापा नियंत्रित होता है। हर सांस में सकारात्मकता, हर आसन में श्रद्धा - यही सच्ची साधना है।"

मुख्य बिंदु: - प्रतिदिन सुबह 6 से 7 बजे निःशुल्क योग सत्र - 200+ परिवार जुड़े, महिला और वरिष्ठ नागरिकों की बड़ी भागीदारी - भारतीय योग संस्थान के तत्वावधान में आयोजित संपादकीय टिप्पणी: स्वाति बाठला जी का यह प्रयास 'स्वस्थ भारत' की परिकल्पना को साकार कर रहा है।

परिवहन विशेष

PARK EDITION • दिनेश सहाय

दिनांक: 28 सितंबर 2024 • पृष्ठ 03

स्वाति बाठला का योग संदेश - पार्क से हुई जनजागरण की शुरुआत

पश्चिम विहार के पार्क में योग की अनन्य, जीओ और जीवन दो

स्वाति बाठला • योग प्रेरक

योग का महत्व

- आस्था के बिना योग, निश्चित योगप्रदायक से नहीं मान्य, देश प्रेमोपानयन प्राप्त करते हैं और जीवनमूल्यों वाले लोगों से प्रभावित होते हैं।
- सामान्यतः जीवन: मानव प्रकृतिगत से मानसिक शांति, शिवाय तन अस्वस्थ में रहता, स्वास्थ्यका आदि तन अस्वस्थ।
- अवसरगत: स्वस्थ जीवन का अर्थ है - सभी में समानता और तन अस्वस्थ में रहता, स्वास्थ्यका आदि तन अस्वस्थ।

स्वाति बाठला का संदेश

"योग के बिना योग, निश्चित योगप्रदायक से नहीं मान्य, देश प्रेमोपानयन प्राप्त करते हैं और जीवनमूल्यों वाले लोगों से प्रभावित होते हैं।

स्वाति बाठला • योग प्रेरक

परिवहन विशेष

MANDIR EDITION

दिनांक: 28 सितंबर, 2024 | पृष्ठ 12 | अंक 2871 | पृष्ठ 04

स्वाति बाठला का योग संदेश - मंदिर प्रांगण में योग और अध्यात्म का संगम

पश्चिम विहार के मंदिर में योग साधना, स्वस्थ तन मन और आत्मा

स्वाति बाठला • योग प्रेरक

Parivahan Vishesh

SOCIETY EDITION

28 सितंबर 2024 • पृष्ठ 03

स्वाति बाठला का योग संदेश - सोसाइटी में घर-घर तक योग का संदेश

पश्चिम विहार की सोसाइटी गेट पर प्रभात फेरी, हर घर योग हर घर निरोग

स्वाति बाठला • योग प्रेरक

परिवहन विशेष

MANDIR EDITION

दिनांक: 28 सितंबर, 2024 | पृष्ठ 12 | अंक 2871 | पृष्ठ 04

स्वाति बाठला का योग संदेश - मंदिर प्रांगण में योग और अध्यात्म का संगम

पश्चिम विहार के मंदिर में योग साधना, स्वस्थ तन मन और आत्मा

स्वाति बाठला • योग प्रेरक

भारतीय योग संस्थान

पंचोत्तर - योग एवं स्वास्थ्य जागरूकता अभियान | स्थापित 2010

पश्चिम विहार में गूँजा योग का मंत्र - जीओ और जीवन दो

स्वाति बाठला के नेतृत्व में भारतीय योग संस्थान की प्रभात फेरी

करो योग - रहो निरोग

घर-घर योग पहुँचाएंगे राष्ट्र को स्वस्थ बनाएंगे

नेतृत्व: स्वाति बाठला

अभियान के उद्देश्य:

- देशीय युवा योगप्रदायक से तन-मन स्वस्थ
- तन मन युवा जीवन शैली को समर्थन देना
- सभी आयु वर्ग के लिए निःशुल्क योग प्रशिक्षण
- सामुदायिक स्वास्थ्य और well-being जागरूकता

निःशुल्क योग कक्षा - प्रातः 5:25 से 6:25 - A-4 पश्चिम विहार

हर दिन, सोमवार से शनिवार | स्थान: A-4 पार्क, पश्चिम विहार, नई दिल्ली - 110063

भारतीय योग संस्थान

पंचोत्तर - योग एवं स्वास्थ्य जागरूकता अभियान | स्थापित 2010

पश्चिम विहार में गूँजा योग का मंत्र - जीओ और जीवन दो

स्वाति बाठला के नेतृत्व में भारतीय योग संस्थान की प्रभात फेरी

करो योग - रहो निरोग

घर-घर योग पहुँचाएंगे राष्ट्र को स्वस्थ बनाएंगे

नेतृत्व: स्वाति बाठला

अभियान के उद्देश्य:

- देशीय युवा योगप्रदायक से तन-मन स्वस्थ
- तन मन युवा जीवन शैली को समर्थन देना
- सभी आयु वर्ग के लिए निःशुल्क योग प्रशिक्षण
- सामुदायिक स्वास्थ्य और well-being जागरूकता

निःशुल्क योग कक्षा - प्रातः 5:25 से 6:25 - A-4 पश्चिम विहार

हर दिन, सोमवार से शनिवार | स्थान: A-4 पार्क, पश्चिम विहार, नई दिल्ली - 110063

टैपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

निवेश धोखाधड़ी दुनिया भर में साइबर अपराध के सबसे विनाशकारी रूपों में से एक बनी हुई है, और हैदराबाद का जालिया माला - जहाँ एक व्यक्ति ने दो गैरों में 1,106 गुनाताओं के माध्यम से 3.73 करोड़ नैवाटि - यह दर्शाता है कि कैसे जालसाज भारी रकम ठगने के लिए भरोसे, तकनीक और मानव मनोविज्ञान का फायदा उठाते हैं। यह घटना निवेश घोटालों के वैश्विक पैमाने, उनकी जटिल रणनीतियों और प्रणालीगत सुरक्षा प्रयासों तथा नागरिक जागरूकता की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है।

हैदराबाद निवेश घोटाला: ऑर्डर खोलने वाला संदेश

पीडित का विवरण: रश्मिनापुत्र एल्लोरकर कोलौली का एक 40 वर्षीय निजी कर्मचारी। नुकसान: नौ गैरों में 1,106 लेन-देन के माध्यम से 3.73 करोड़। कार्यणाली (Modus Operandi): 0 जालसाज ने पीडित को लुभाते हुए लिए एक व्यावसायिक विज्ञापन का इस्तेमाल किया। 0 काल्पनिक लाभ और खोबस दिखाते वाली एक फर्जी निवेश वेबसाइट बनाई। 0 यह दावा करके पैसे निकालने से रोका कि यदि धन ज़रूरी निकाला गया तो 'बोबस का नुकसान' हो जाएगा। 0 जुड़ाव और विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए एक वेटबैक का उपयोग किया।

0 वेबसाइट 17 सितंबर 2026 को ऑफलाइन हो गई, जिससे धोखाधड़ी का पदोफारा हुआ। सीमा पर ग्राम रणनीति: निवेश धोखाधड़ी केवल भारत तक सीमित नहीं है - संयुक्त राज्य अमेरिका: पीजी स्क्रीमों और क्रिप्टो घोटालों के कारण निवेशकों को अरबों का नुकसान हुआ है। - चीन और दक्षिण-पूर्व एशिया: सीमा पार 'पिंग-बुटरिंग' (Pig-butcher) घोटाले पीडितों को फर्जी ट्रेंडिंग ऐप्स में फंसाते हैं। - यूरोप: बैंकवार - रूस घोटाले फर्जी स्टॉक टिप्स के जरिए सोवियत लोनों को गिराना बनाते हैं। - भारत: डॉक्टरों, वरिष्ठ नागरिकों और पेशेवरों

को तेजी से गिराना बनाया जा रहा है, जिससे सेकेंडो करोड़ का नुकसान हो रहा है। सीमा पर ग्राम रणनीति: निवेश धोखाधड़ी केवल भारत तक सीमित नहीं है - संयुक्त राज्य अमेरिका: पीजी स्क्रीमों और क्रिप्टो घोटालों के कारण निवेशकों को अरबों का नुकसान हुआ है। - चीन और दक्षिण-पूर्व एशिया: सीमा पार 'पिंग-बुटरिंग' (Pig-butcher) घोटाले पीडितों को फर्जी ट्रेंडिंग ऐप्स में फंसाते हैं। - यूरोप: बैंकवार - रूस घोटाले फर्जी स्टॉक टिप्स के जरिए सोवियत लोनों को गिराना बनाते हैं। - भारत: डॉक्टरों, वरिष्ठ नागरिकों और पेशेवरों

पूँजी, पैमाने या व्यावसायिक पूँजी खो देते हैं। - मनोवैज्ञानिक नुकसान: भ्रमों, डर और रिपोर्ट करने में हिचकियाँ नुकसान को और बढ़ा देती हैं। - प्रणालीगत जोखिम: बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी डिजिटल फाइनेंस में विश्वास को कमजोर करती है और वैश्व फिनटेक को प्रभावित करने की गति को धीमा करती है। निवारक उपाय प्रणालीगत और नियामक - SEBI/RBI: सत्यापित वित्तीय ऐप्स की एक विश्वसनीय रजिस्ट्री बनाए रखना चाहिए। - बैंक: सौदेख बल्क ट्रांसफर को प्रोत्साहित करने के लिए एआई (AI) तैनात करना चाहिए।

- दूरसंचार कंपनियों: असत्यापित व्यावसायिक बिज़नेस नंबरों को ब्लॉक करना चाहिए। नागरिक जागरूकता - मुख्य नियम (Golden Rule): अधिक रिस्क = अधिक जोखिम। - SEBI/RBI पोर्टल के माध्यम से कंपनियों की सत्यापना। - अज्ञात लिंक से ऐप्स डाउनलोड करने से बचें। - सौदेख बल्क ट्रांसफर को प्रोत्साहित करने के लिए एआई (AI) तैनात करना चाहिए।

की पुष्टि करें। - कॉल करें (CALL) - केवल प्राधिकृत रैपलाइन का उपयोग करें। - रिपोर्ट करें (REPORT) - 1930 जयल करें या ऑनलाइन शिकायत दर्ज करें। हैदराबाद का मामला एक कड़ा अनुसंधान है कि निवेश धोखाधड़ी को इस तरह तैयार किया जाता है कि वह वैश्व लेन और समय के साथ पीड़ितों को पूरी तरह निवोड दे। वैश्विक स्तर पर, जालसाज बड़े पैमाने पर निवेश धोखाधड़ी को अज्ञान देने के लिए डिजिटल फोटोफॉर्म और मानव मनोविज्ञान का फायदा उठाते हैं। केवल प्रणालीगत नियमन, तकनीकी सुरक्षा प्रयासों और नागरिक सतर्कता का संयोजन ही इस प्रवाह को रोक सकता है।

सेवा मेरा योगदान-स्वच्छता गतिविधियों के साथ ग्रामीण विकास पर प्रशासन का पूरा फोकस

जिला इज्जर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता गतिविधियों को मिल रहा बढ़ावा, स्वच्छता को जन आंदोलन बनाने का किया जा रहा आह्वान

परिवहन विशेष न्यूज

इज्जर, 28 सितंबर।

सेवा मेरा योगदान थीम के साथ सफाई करने के साथ ग्रामीण विकास पर प्रशासन का पूरा फोकस है। जिलाभर में डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में चल रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत 'सेवा मेरा योगदान' थीम पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। सोमवार को भी जिला के विभिन्न ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता अभियान चलाया गया। बेरी, बहादुरगढ़ और इज्जर शहरी क्षेत्रों में डीएमसी जगनिवास तथा ग्रामीण क्षेत्रों में जिला परिषद के सीईओ मनीष फोगाट के दिशा-निर्देशन में स्वच्छता गतिविधियों को आगे बढ़ाया जा रहा है। सोमवार को डिप्टी सीईओ निशा तंवर ने विभिन्न गांवों में आयोजित जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लेते हुए ग्रामीणों को सेवा मेरा योगदान कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। जागरूकता कार्यक्रमों में ग्रामीणों से घर, मोहल्ले और सार्वजनिक स्थलों की







नियमित सफाई बनाए रखने तथा अन्य लोगों को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक करने की अपील की गई। वहीं शहरी क्षेत्रों में डोर टू डोर कूड़ा संग्रहण, गीला व सूखा कूड़ा के पृथक्करण पर लोगों को जागरूक किया गया।

पौधारोपण कर दिया जा रहा

पर्यावरण संरक्षण का संदेश

पहचान है। उन्होंने ग्रामीणों से 'स्वच्छता ही सेवा' को जन आंदोलन बनाकर गांव को साफ-सुथरा और आदर्श बनाने में सहयोग देने की अपील की। उन्होंने कहा कि पर्यावरण की स्वच्छता एवं संरक्षण में पौधों की अहम भूमिका है। उन्होंने सरोवर के पास पौधारोपण कर 'पेड़

लगाओ, पर्यावरण बचाओ' का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि स्वच्छता अभियान को सफल बनाने के लिए जन भागीदारी जरूरी है। गांव चमनपुरा में आयोजित कार्यक्रम में खंड समन्वयक पूनम सैनी ने बताया कि बेरी खंड की समस्त ग्राम

पंचायतों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं ग्रामीणों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करते हुए गांव को स्वच्छ, स्वस्थ एवं सुंदर बनाने के लिए सामूहिक सहभागिता का आह्वान किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि प्रतिदिन सेवा मेरा योगदान तहत कार्यक्रमों में ग्रामीणों को

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम-2026, कचरे के लिए चार डस्टबिन की पहचान, खुले में कचरा न फैलाने, प्लास्टिक के उपयोग को कम करने तथा प्लास्टिक के पुनः उपयोग और रिसाइक्लिंग के बारे में जानकारी दी जा रही है।

हरेक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में होना जरूरी : डीसी

अगले दो दिनों यानि 30 सितंबर तक दावे- आपत्तियां दर्ज कराएं, पात्र युवा तुरंत भरें फॉर्म-6

डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने जिला इज्जर के नागरिकों से की अपील

परिवहन विशेष न्यूज

इज्जर, 28 सितंबर

भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिला इज्जर के सभी चारों विधानसभा क्षेत्रों में एसआईआर-2026 के तहत मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण का कार्य जारी है। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने कहा कि अभियान का उद्देश्य प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में शामिल करना तथा

अपात्र नामों को हटाकर सूची को शुद्ध एवं अद्यतन बनाना है। उन्होंने पात्र नागरिकों से अपील की कि वे अपनी और परिवार के पात्र सदस्यों की जानकारी मतदाता सूची में अवश्य जांचें। जिन पात्र नागरिकों का नाम सूची में नहीं है, वे आवश्यक दस्तावेजों के साथ फॉर्म-6 भरकर नाम दर्ज करवाएं। पात्र युवाओं से उन्होंने विशेष रूप से कहा कि वे मतदाता बनने के लिए तुरंत आवेदन करें और अंतिम तिथि का ईंतजार न करें।

आगामी 30 सितंबर तक दर्ज कराएं दावे- आपत्तियां

डीसी ने बताया कि एसआईआर-2026 के संशोधित कार्यक्रम के अनुसार दावे एवं आपत्तियां 30 सितंबर तक दर्ज कराई जा सकती हैं। इनका निपटारा 28 अक्टूबर तक होगा तथा अंतिम मतदाता सूची 6 नवंबर को प्रकाशित की जाएगी। मतदाता नाम, पता, आयु, फोटो सहित अन्य विवरणों की जांच कर जुट मिलने पर समय रहते



सुधार के लिए आवेदन करें।

पात्र मतदाता फॉर्म-7 व 8 से भी कर सकते हैं आवेदन

डीसी ने बताया कि मतदाता सूची में आवश्यक संशोधन के लिए फॉर्म-8 तथा मृत, अपात्र या अन्य स्थान पर पंजीकृत मतदाता के नाम पर आपत्ति के लिए फॉर्म-7 का उपयोग किया जा सकता है। आवेदन प्रक्रिया में सहायता के लिए नागरिक अपने क्षेत्र के बीएलओ,

ईआरओ अथवा आईआरओ से संपर्क कर सकते हैं। मतदाता हेल्पलाइन 1950 पर भी सहायता प्राप्त की जा सकती है।

डीसी ने कहा कि मतदाता सूची को शुद्ध एवं विश्वसनीय बनाने में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी जरूरी है। उन्होंने सभी पात्र नागरिकों से निर्धारित समय सीमा में आवश्यक कार्रवाई पूरी करने का आह्वान किया।

सेवा संकल्प अभियान के तहत गांव सिलाना में आज लगेगा सेवा सेतु कैंप

सेवा सेतु कैंप के माध्यम से सरकार की योजनाओं का लाभ मिल रहा है एक छत के नीचे जिला परिषद के सीईओ मनीष फोगाट ने दी जानकारी

इज्जर, 28 सितंबर

जिलाभर में सेवा संकल्प अभियान के तहत आमजन को सरकार की योजनाओं का लाभ उनके नवीक पहुंचाने के उद्देश्य से जिला के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में

सेवा सेतु कैंप लगाए जा रहे हैं।

डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में लग रहे सेवा सेतु कैम्प में लोग सरकार की योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद मनीष फोगाट ने जानकारी देते हुए बताया कि आगामी 15 अक्टूबर तक निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार जिले के विभिन्न स्थानों पर सेवा सेतु कैंप लगाए जा रहे हैं। सीईओ ने बताया

कि मंगलवार 29 सितंबर को गांव सिलाना तथा 30 सितंबर को बहादुरगढ़ ब्लॉक मुख्यालय में सेवा सेतु कैंप लगाया जाएगा।

यह रहेगा आगामी सेवा सेतु कैम्प का विस्तृत शेड्यूल

सीईओ ने बताया कि 1 अक्टूबर को गांव रोहद, 3 अक्टूबर को गांव डीघल, 5 अक्टूबर को गांव दुबलधन, 6 अक्टूबर को बादली ब्लॉक मुख्यालय व मातनहेल ब्लॉक मुख्यालय, 7 अक्टूबर को

गांव बुर्पनिया तथा 8 अक्टूबर को गांव गुभाना में सेवा सेतु कैंप आयोजित होगा। उन्होंने बताया कि 9 अक्टूबर को गांव खानपुर खुर्द व गांव पाटोदा, 10 अक्टूबर को गांव बिरोहड़, 12 अक्टूबर को माछरोली ब्लॉक मुख्यालय व गांव ढाकला, 13 अक्टूबर को गांव खुड्डन, 14 अक्टूबर को साल्हावास ब्लॉक मुख्यालय तथा 15 अक्टूबर को गांव भुरावा में सेवा सेतु कैंप आयोजित किए जाएंगे।

नवरात्र मेला में श्रद्धालुओं के लिए जरूरी सुविधाएं प्रदान करना सुनिश्चित करें अधिकारी : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने बेरी में शारदीय नवरात्र मेला की तैयारियों को लेकर अधिकारियों की बैठक में दिए जरूरी दिशा निर्देश

बेरी स्थित माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में 11 अक्टूबर से 26 अक्टूबर तक आयोजित होगा मेला

इज्जर, 28 सितंबर।

डीसी वर्षा खांगवाल ने धर्मनगरी बेरी स्थित माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में लगने वाले आश्विन शारदीय नवरात्र मेले की तैयारियों को लेकर अधिकारियों की बैठक ली और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। डीसी ने बैठक में 11 अक्टूबर से 26 अक्टूबर तक लगने वाले शारदीय नवरात्र मेला के दौरान धर्मनगरी बेरी आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए आवश्यक प्रबंधों को लेकर विभागीय अधिकारियों के साथ चर्चा की। माता भीमेश्वरी देवी श्राइन बोर्ड की सीईओ एवं एसडीएम रेणुका नांदल ने डीसी को मेला की तैयारियों को लेकर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मुख्य मेला 16 अक्टूबर से 19 अक्टूबर को होगा।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि बेरी मेला में सप्तमी और अष्टमी के दिन मां



भीमेश्वरी देवी के दर्शनों के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है। ऐसे में मेला के पिछले अनुभवों के आधार पर श्रद्धालुओं का अनुमान लगाते हुए मेला परिसर में सुरक्षा व अन्य मूलभूत सुविधाओं को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मेला परिसर पत्र संबंधित विभाग द्वारा जारी किए जाएंगे। साथ ही पार्किंग, सुरक्षा, पीने के पानी, रात्रि के समय रोशनी के इंतजाम, स्वास्थ्य सुविधाएं, अस्थाई शौचालय, सीसीटीवी,

माइक सर्विस, अग्निशमन सेवाएं आदि इंतजामों की व्यवस्था को लेकर संबंधित अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए।

डीसी वर्षा खांगवाल ने मेला के संवेदनशील दिवसों की पहचान को लेकर भी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि श्रद्धालुओं की उमड़ने वाली भीड़ को लेकर कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए ड्यूटी मजिस्ट्रेट भी नियुक्त किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि व्यवस्था करते समय यह ध्यान रखा जाए कि धर्मनगरी बेरी के मेले में पहुंचने वाले

किसी भी श्रद्धालु माता के दर्शन करने व आवागमन में किसी प्रकार की कोई भी परेशानी न हो। मेला के दौरान लगने वाले भंडारों में सिंगल यूज प्लास्टिक पर पूरी तरह पाबंदी रहेगी। इसके लिए प्लास्टिक के स्थान पर स्टील बर्तन का उपयोग किया जाये। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को मंदिर परिसर में नवरात्र से ही मेडिकल यूनिट स्थापित करने के निर्देश दिए। बैठक में माई भारत व रेडक्रास स्वयंसेवक की भी भागीदारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

‘सेवा संकल्प अभियान’ के तहत ‘सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज’ का आयोजन

छात्राओं को नवाचार, उद्यमिता और समस्या-समाधान आधारित सोच के लिए किया प्रेरित

बहादुरगढ़, 28 सितंबर।

स्थानीय राजकीय महिला महाविद्यालय में सोमवार को डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन एवं प्राचार्या अलका गुलाटी के दिशा-निर्देशन में 'सेवा संकल्प अभियान' के अंतर्गत 'सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नगर परिषद चेयरपर्सन सरोज राठी ने छात्राओं को नवाचार के माध्यम से सुनहरे भविष्य की नींव रखने तथा शिक्षा के माध्यम से स्वयं को सक्षम बनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि रचनात्मक सोच और निरंतर सीखने की प्रवृत्ति छात्राओं को नए अवसरों से जोड़ सकती है। उन्होंने छात्राओं से आह्वान किया कि वे अपनी प्रतिभा को अज्ञान जका का उपयोग समाज हित में करते हुए ऐसे नवाचार विकसित करें, जिन्हें धरातल पर लागू किया जा सके। उन्होंने छात्राओं को 'समस्या से समाधान' की सोच अपनाने के लिए प्रेरित किया तथा स्वच्छता, जल संरक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, पर्यावरण, डिजिटल सेवाओं, यातायात एवं

ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों में नवाचार की संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

भाजपा नेता दिनेश शेखावत ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज का भारत नवाचार, प्रतिभा एवं जनभागीदारी के नए दौर की ओर बढ़ रहा है। 'सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज' युवाओं को समाज की वास्तविक समस्याओं को समझने और उनके समाधान के लिए नवीन विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि बेटियां आज विज्ञान, तकनीक, प्रशासन, शोध एवं उद्यमिता सहित प्रत्येक क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। उनके नवीन विचार समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर महाविद्यालय का विशेष जोर प्राचार्या अलका गुलाटी ने कहा कि महाविद्यालय छात्राओं के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उनमें रचनात्मक चिंतन, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं उद्यमशीलता की भावना विकसित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने छात्राओं को अपने आसपास की समस्याओं को अवसर के रूप में देखने तथा उनके समाधान के लिए नवाचार आधारित पहल करने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम में छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपने विचार एवं सुझाव साझा किए।

उद्यमिता एवं स्वरोजगार के अवसरों की दी जानकारी

कार्यक्रम के दौरान जिला उद्योग केंद्र के औद्योगिक विस्तार अधिकारी मंजीत दहिया ने छात्राओं को उद्योग, स्वरोजगार एवं उद्यमिता से संबंधित अवसरों तथा विभागीय योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने छात्राओं को अपने रचनात्मक विचारों को व्यावहारिक रूप देने और उन्हें भविष्य के उद्यमों से जोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। इस दौरान छात्राओं को बताया गया कि अभियान के अंतर्गत वे अपने प्रोजेक्ट, मॉडल, प्रस्तुति, वीडियो, डिजाइन एवं शोध आधारित विचार प्रस्तुत कर सकती हैं। कार्यक्रम में प्रतियोगिता के अंतर्गत निर्धारित पुरस्कारों की जानकारी भी दी गई।

यह गणमान्य व्यक्ति और अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर किसान मोर्चा अध्यक्ष राम अहेलावत, पूर्व वाइस चेयरमैन पाले राम शर्मा, मंडल अध्यक्ष सुदेश रंगा, पार्षद राजेश चवत तथा जिला उद्योग केंद्र से औद्योगिक विस्तार अधिकारी मंजीत दहिया सहित अन्य गणमान्य अतिथिगण उपस्थित रहे।

दही फिर दूध नहीं बनता - आरक्षण और SC/ST एक्ट पर कठोर यथार्थ

दूध, दूधपेस्ट और उबले अंडे की तरह इतिहास की कुछ प्रक्रियाएं Irreversible हैं – समाधान असंभव को संभव करने में नहीं, अप्रासंगिक बनाने में है

- परिवहन विशेष संपादकीय मंडल

दही को मथ कर आप मक्खन निकाल सकते हैं, पर उसे फिर से दूध नहीं बना सकते। दूधपेस्ट दूध से बाहर आ गया तो वापस नहीं जाएगा। उबले अंडे से ऑमलेट नहीं बनेगा। यही कठोर यथार्थ आरक्षण और SC/ST एक्ट का भी है। हम चाहें तो भावुक हो सकते हैं, पर यह व्यवस्था वापस नहीं होगी। प्रश्न यह नहीं है कि यह खत्म होगी या नहीं, प्रश्न यह है कि यह अप्रभावी और अप्रासंगिक कैसे होगी ?

1. **तथ्य – इतिहास क्या**

कहता है ?

A) SC/ST एक्ट मोदी नहीं लाए: अनुसूचित जाति और जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 में बना । 1990 में लागू हुआ । तब से लेकर 2014 तक यह अपने मूल और कठोर स्वरूप में ही रहा । जिस कांग्रेस ने इसे लाया, उसी को देश ने बार-बार चुना, तब किसी ने इसे 'रागा एक्ट' नहीं कहा। आज इसे 'नमो एक्ट' कहना राजनीतिक सुविधा है, ऐतिहासिक तथ्य नहीं।

B) 2018 में क्या हुआ था ? - न्यायिक छेड़छाड़ और आग: 20 मार्च 2018 को सुप्रीम कोर्ट ने डॉ. सुभाष काशीनाथ महाजन बनाम महाराष्ट्र सरकार में दो न्यायोचित प्रावधान जोड़े - (1) FIR से पहले प्रारंभिक जांच और (2) अग्रिम जमानत पर विचार । उद्देश्य दुरुपयोग रोकना था । लेकिन इस निर्णय को देश में आग लगाने का बहाना बना दिया गया । 12 अप्रैल 2018 को भारत बंद में 9 लोगों की मौत हुई, अरबों की संपत्ति जली ।

तैयारी पहले से थी, बहाना कोर्ट के फैसले ने दिया ।

देश के मुखिया के पास उस आग को बुझाने के लिए संसद से सुप्रीम कोर्ट के आदेश को पलटने के अलावा कोई तात्कालिक विकल्प नहीं था । अगस्त 2018 में संशोधन विधेयक लाकर मूल एक्ट बहाल किया गया । यह न्याय-अन्याय का नहीं, राष्ट्र की कानून-व्यवस्था बचाने का निर्णय था ।

2. मुख्य बिंदु - असली जिम्मेदारी किसकी ? लेख का मूल प्रश्न मोदी या कांग्रेस नहीं है । मूल प्रश्न है - ऐसे कानून की जरूरत का तर्क कहाँ से आया ?

किसी ने यं ही बैठकर नहीं लिख दिया कि एक व्यक्ति जन्म से ही पीड़ित माना जाएगा और दूसरा जन्म से ही संभावित अपराधी । इस तर्क को वैधता हमारे ही सामाजिक व्यवहार ने दी । जब हम स्वयं जन्म के आधार पर किसी को श्रेष्ठ और किसी को हीन मानने को तर्कसंगत, नैतिक और प्राकृतिक मानते रहे, तो दूसरे ने उसी तर्क को अपने

राजनीतिक लाभ के लिए उल्टा कर दिया ।

यदि हम सौ नुकसान उठाकर भी ऊँच-नीच का तर्क छोड़ने को तैयार नहीं, तो जिसे उस तर्क से चार राजनीतिक फायदे मिल रहे हैं, वह उसे क्यों छोड़ेगा ?

3. भविष्य का मार्ग - खत्म नहीं, अप्रासंगिक बनाना यह लेख एक कठोर सत्य स्वीकार करता है - आरक्षण और यह एक्ट कभी खत्म नहीं होगा । इसे खत्म करने की मांग करना उसी तरह है जैसे दही से दूध बनाने की कोशिश करना ।

लेकिन यह अप्रभावी और अप्रासंगिक जरूर हो सकता है । इसका एक ही मार्ग है - गहरा और दीर्घकालिक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन ।

अगर अगले 20-30 वर्षों तक देश जाति के इस अंतहीन विमर्श को किनारे रखकर अपनी आर्थिक प्रगति, निजी क्षेत्र के विस्तार और स्किल-आधारित रोजगार पर ध्यान दे, तो सरकारी नौकरी का वह

आकर्षण ही कम हो जाएगा जिस पर आरक्षण टिका है ।

आज की पीढ़ी अंतरजातीय विवाह, शहरीकरण और डिजिटल पहचान की ओर बढ़ रही है । दो पीढ़ी बाद शायद हमारे पोते यही कहेंगे - रंमरे नाना खुद को किस जाति का बताते थे और दादा किस जाति का, मुझे तो याद भी नहीं । जाति जब याददाश्त से मिटेगी, तभी कानून किताब में रहकर भी अप्रासंगिक हो जाएगा ।

संपादकीय निष्कर्ष: जब तक हम 'अगर' वाली इस 20-30 साल की शांति को नहीं अपनाएंगे, तब तक यही चक्र चलता रहेगा - हर कुछ साल में ज्यूडिशियरी एक विषय उठाएगी, विपक्ष उसी को बहाना बनाकर देश में आग लगाएगा, और जिसे देश चलाता है, वह हाथ जलाकर आग बुझाएगा । आग बुझाने वाले को दोष देना आसान है, आग लगाने का बहाना देने वाला व्यवहार छोड़ना कठिन । राष्ट्रहित इसी कठिन मार्ग को चुनने में है ।



संपादकीय
चिंतन-मनन

परिवहन विशेष

Editorial | मत एवं विश्लेषण

29 सितंबर 2026 • मंगलवार

दही फिर दूध नहीं बन सकता - आरक्षण और SC/ST एक्ट पर कठोर यथार्थ

कुछ प्रक्रियाएं Irreversible हैं - समाधान खत्म करने में नहीं, अप्रासंगिक बनाने में है.

सामाजिक नीति और कानून जब पहचान एवं संरक्षण के मूल उद्देश्य से हटकर साधन के बजाय साध्य बन जाते हैं, तब उनका स्थायी लाभ घटने लगता है। आरक्षण व्यवस्था ने वंचित समुदायों को मुख्यधारा में स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, किंतु अब प्रश्न यह है कि यह प्रक्रिया आत्म-निर्भरता की ओर ले जा रही है या निरंतर निर्भरता की ओर। इसी प्रश्न पर SC/ST अधिनियम का उद्देश्य सामाजिक असमानता और उन्मीड़न रोकना था, पर इसके दुरुपयोग और भय के माहौल ने समाज में अविश्वास बढ़ाया है।

तथ्य	मूल प्रश्न ?	भविष्य मार्ग
- आरक्षण का मूल लक्ष्य - अवसर में समानता सुनिश्चित करना था। - SC/ST एक्ट 1989 सामाजिक सुरक्षा हेतु बना, 2018 में प्रावधान सख्त। - वर्तमान में लाभार्थी वर्ग के भीतर ही असमानता बढ़ी।	- क्या संरक्षण की व्यवस्था अब प्रतिगामी हो रही है? - क्या कानून का भय संवाद को रोक रहा है? - नीति का मूल्यंकन परिणाम से होगा, न कि इरादे से?	- लक्ष्य: स्थायी सशक्तिकरण, स्थायी संरक्षण नहीं। - आंकड़ा-आधारित समीक्षा और समयबद्ध पुनर्मूल्यांकन आवश्यक। - संवाद, कोशल और आर्थिक सशक्तिकरण को केंद्र में रखें।

“आग लगाने का बहाना देने वाला व्यवहार छोड़ना होगा।”

Report: Parivahan Vishesh | Editor: संजय कुमार बाठला | Date: 29 September 2026 Tuesday

पराली की समस्या का वैज्ञानिक समाधान: किसान और विज्ञान साथ-साथ

लेखक डॉ. विजय गर्ग, परिवहन विशेष समाचार पत्र

पराली जलाना आधुनिक कृषि से जुड़ी सबसे प्रमुख पर्यावरणीय चुनौतियों में से एक बन गया है, विशेषकर उत्तर भारत के धान-गेहूँ वाले क्षेत्रों में। हर वर्ष धान की कटाई के बाद किसानों के सामने यह कठिन प्रश्न होता है कि अगली फसल की बुवाई से पहले खेत को कम समय और कम लागत में कैसे तैयार किया जाए। दो फसलों के बीच समय कम होने के कारण पराली जलाना कई बार सबसे आसान और तेज विकल्प दिखाई देता है। लेकिन इससे निकलने वाला धुआँ वायु प्रदूषण को बढ़ाता है और पर्यावरण के लिए गंभीर चिंताएँ पैदा करता है।

इसलिए पराली की समस्या को केवल किसानों की समस्या या उनकी विफलता के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह कृषि, अर्थव्यवस्था, तकनीक और पर्यावरण से जुड़ी एक जटिल समस्या है। इसका स्थायी समाधान किसानों, कृषि वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, नीति-निर्माताओं, विश्वविद्यालयों, उद्योगों और स्थानीय समुदायों के सामूहिक प्रयास से ही संभव है।

सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि किसान पराली क्यों जलाते हैं। धान की कटाई के बाद खेत में बड़ी मात्रा में पुआल और अन्य फसल अवशेष बच जाते हैं। इन्हें हाथ से हटाने के लिए काफी श्रम की आवश्यकता होती है, जबकि बड़ी मात्रा में पराली को एकत्र करना, परिवहन करना और सुरक्षित रखना भी महंगा हो सकता है। इसके साथ ही किसानों के पास गेहूँ की बुवाई के लिए बहुत कम समय होता है। बढ़ती कृषि लागत, मौसम की अनिश्चितता और बाजार की चुनौतियों से जूझ रहे किसान के लिए खेत साफ करने का तेज और कम लागत वाला तरीका आकर्षक लग सकता है।

यहाँ विज्ञान की भूमिका शुरू होती है—सिर्फ सलाह देने में नहीं, बल्कि व्यावहारिक, सस्ती और आसानी से अपनाई जा सकने वाली तकनीक उपलब्ध कराने में।

पक्षियों के गीत के पीछे का विज्ञान: ब्लैकबर्ड की आवाज़ हमारे कानों को क्यों भाती है?

लेखक डॉ. विजय गर्ग, परिवहन विशेष समाचार पत्र

पक्षियों का गीत प्रकृति की सबसे सुंदर ध्वनियों में से एक है। सुबह किसी पेड़ पर बैठे पक्षी का मधुर स्वर एक सामान्य सुबह को भी शांत और ताज़गी से भर सकता है। लेकिन कुछ पक्षियों की आवाज़ मानव कानों को विशेष रूप से मधुर क्यों लगती है? इसका उत्तर जीव विज्ञान, ध्वनि विज्ञान, विकासवाद और हमारे मस्तिष्क द्वारा ध्वनि को संसाधित करने के तरीके के रोचक मेल में छिपा है।

मधुर आवाज़ के लिए प्रसिद्ध अनेक पक्षियों में यूरोपीय ब्लैकबर्ड (Turdus merula) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसका गीत समृद्ध और विविध सीढ़ी जैसी ध्वनियाँ, स्वर-खंडों और संगीतमय सुरों से बना होता है। यह गीत अक्सर सहज और बिना किसी प्रयास के प्रस्तुत किया हुआ प्रतीत होता है। मनुष्यों के लिए ये विशेषताएँ इसकी आवाज़ को शांतिदायक और भावनात्मक रूप से सुखद बना सकती हैं।

इसमें एक महत्वपूर्ण कारक ध्वनि की संरचना है। मानव श्रवण तंत्र स्वर, लय, तीव्रता और समय के पैटर्न के प्रति संवेदनशील होता है। जो ध्वनियाँ अचानक बदलने के बजाय धीरे-धीरे बदलती हैं, उन्हें समझना और सुनना अक्सर अधिक सहज और सुखद हो सकता है। ब्लैकबर्ड के गीत में स्पष्ट स्वर और पिच में क्रमिक परिवर्तन विशेष रूप से मधुर क्यों लगती है? इसका उत्तर जीव विज्ञान, ध्वनि विज्ञान, विकासवाद और हमारे मस्तिष्क द्वारा ध्वनि को संसाधित करने के तरीके के रोचक मेल में छिपा है।

मधुर आवाज़ के लिए प्रसिद्ध अनेक पक्षियों में यूरोपीय ब्लैकबर्ड (Turdus merula) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसका गीत समृद्ध और विविध सीढ़ी जैसी ध्वनियाँ, स्वर-खंडों और संगीतमय सुरों से बना होता है। यह गीत अक्सर सहज और बिना किसी प्रयास के प्रस्तुत किया हुआ प्रतीत होता है। मनुष्यों के लिए ये विशेषताएँ इसकी आवाज़ को शांतिदायक और भावनात्मक रूप से सुखद बना सकती हैं।

पक्षियों का गीत मानव मस्तिष्क की भावनात्मक प्रणालियों से भी जुड़ता

है। सुखद प्राकृतिक ध्वनियाँ हमारा ध्यान आकर्षित कर सकती हैं, लेकिन उन्हें सुनने के लिए उस तीव्र एकाग्रता की आवश्यकता नहीं होती जो सायनर, यातायात या मशीनों की आवाज़ के समथ हो सकती हैं। इसलिए मधुर पक्षी-स्वर मस्तिष्क को उत्तेजित करते हुए भी उसे अपेक्षाकृत शांत बनाए रख सकते हैं।

इसके पीछे एक महत्वपूर्ण विकासवादी कारण भी है। पक्षी मुख्य रूप से मनुष्यों का मनोरंजन करने के लिए नहीं गाते। उनके गीत मुख्यतः संचार के लिए विकसित हुए हैं—जैसे साथियों को आकर्षित करना, अपने क्षेत्र की रक्षा करना और एक-दूसरे की पहचान करना। मनुष्य जिन ध्वनियों को सुंदर मानते हैं, वे कई मामलों में उन संचार प्रणालियों का एक सुखद उप-उत्पाद हैं, जो पक्षियों के लिए विकसित हुई थीं।

जिस वातावरण में हम पक्षियों का गीत सुनते हैं, उसका भी महत्व है। पेड़ों, बगीचों या जंगल में गाता हुआ ब्लैकबर्ड किसी शोर-भरे शहरी वातावरण में बजाई गई रिकॉर्डिंग से



बिल्कुल अलग श्रवण अनुभव प्रदान करता है। प्राकृतिक ध्वनियाँ हमें जीवंत पर्यावरण से जुड़ाव का अनुभव करा सकती हैं, जबकि यांत्रिक शोर की अनुपस्थिति गीत की सुक्ष्म विशेषताओं को अधिक स्पष्ट रूप से सुनने में मदद करती है।

बायोअकूस्टिक्स (जैव-ध्वनि विज्ञान) का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक पक्षियों की ध्वनियों में आवृत्ति, अवधि, तीव्रता, लय और मानवीय बातचीत लगातार सुनाई देती रहती हैं। ऐसी ध्वनियों के लगातार संपर्क में रहने से श्रवण थकावट और तनाव बढ़ सकता है

इसके विपरीत, पक्षियों के गीत, बहते पानी और पेड़-पौधों के बीच बहती हवा से बना प्राकृतिक ध्वनि-दृश्य अधिक विविध और कम हस्तक्षेपकारी श्रवण वातावरण प्रदान कर सकता है।

हालाँकि, पक्षियों के गीत को केवल सार्वभौमिक "साउंड थेरेपी" कहना उचित नहीं होगा। लोग अपने अनुभवों, संस्कृति, वातावरण और व्यक्तिगत पसंद के आधार पर ध्वनियों के प्रति अलग-अलग प्रतिक्रिया देते हैं। जो आवाज़ एक व्यक्ति को शांत करती है, वह दूसरे व्यक्ति के लिए ध्यान भंग करने वाली या अप्रिय भी हो सकती है।

फिर भी, ब्लैकबर्ड प्रकृति और मानव इंद्रियों के संबंध का एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसका गीत दिखाता है कि जैविक संचार किस प्रकार किसी दूसरी प्रजाति—मनुष्य—के लिए सौंदर्य और आनंद का स्रोत बन सकता है।

इसमें एक और गहरा संदेश छिपा है। जब हम ध्यानपूर्वक पक्षियों को सुनते हैं, तो हम केवल मधुर ध्वनियाँ

नहीं सुन रहे होते। हम जीवित प्राणियों को एक संपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र के भीतर संवाद करते हुए सुन रहे होते हैं। इसलिए पक्षियों के गीत में कमी केवल सुंदरता का नुकसान नहीं हो सकती; यह आवास, भोजन की उपलब्धता, प्रदूषण और जैव-विविधता में हो रहे बदलावों का संकेत भी हो सकती है।

इसलिए पक्षियों और उनके प्राकृतिक आवासों की रक्षा करना केवल पारिस्थितिक संतुलन के लिए ही नहीं, बल्कि उन प्राकृतिक ध्वनि-दृश्यों को सुरक्षित रखने के लिए भी महत्वपूर्ण है, जो मानव जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

अगली बार जब कोई ब्लैकबर्ड पास के पेड़ से गाए, तो कुछ क्षण रुककर ध्यान से सुनिए। उन सरल दिखाई देने वाले स्वरों के पीछे विकासवाद, संचार, ध्वनि विज्ञान और तंत्रिका-विज्ञान का अद्भुत मेल छिपा है। हमारे कानों तक पहुँचने वाली यह सुंदर धुन वास्तव में एक अत्यंत जटिल जैविक संकेत है—और मानव इंद्रियों के लिए प्रकृति के सबसे आनंददायक उपहारों में से एक है।

भिखारी - कौन है सचमुच का भिखारी ?

फुटपाथ पर हाथ फैलाने वाला मजबूर है, पर दहेज मांगने वाला ? समाज के आइने में एक कड़वा सच

संपादकीय टिप्पणी : जो प्राप्त है, पर्याप्त है – SIP करो मस्त रहो

संपादक: संजय कुमार बाठला

कहानी: नई दुल्हन किरन को शादी के दूसरे दिन दहेज में मिली नई गाड़ी से पति दिनेश लॉन्ग ड्राइव पर निकला। तेज रफ्तार पर टोकने पर बोला – रंआज तक दोस्तों को गाड़ी चलाई है, आज अपनी गाड़ी है, सालों की तमन्ना पूरी हुई, इसीलिए तुम्हारे डैड से मांग करी थी ह

तभी गाड़ी के आगे एक अपाहिज भिखारी आ गया। दिनेश ने गाली दी – “मरेगा क्या भिखारी साले, देश को बरबाद करके रहता है तुम लोगों ने।” किरन गाड़ी से उतरी, उस अपाहिज को फुटपाथ पर बिठाया, 100 रुपये दिए और कहा – “माफ करना काका, हमारी शादी हुई है, मिठाई खाइएगा और आशीर्वाद दीजिएगा।”

वापस आकर दिनेश बोला – “तुम जैसों की वजह से इनकी हिम्मत बढ़ती है।”

तब किरन ने जो कहा, उसने

दिनेश को खामोश कर दिया – >भिखारी तो मजबूर था इसलिए भीख मांग रहा था, करना सब कुछ सही होते हुए भी लोग भीख मांगते हैं दहेज लेकर ! खून-पसीना मिला होता है गरीब लड़की के माँ-बाप का इस दहेज में। आपने भी तो पापा से गाड़ी मांगी थी तो कौन भिखारी हुआ ? वो मजबूर अपाहिज या...? >एक बाप अपने जिगर के टुकड़े को 20 साल संभालकर रखता है, दूसरे को दान करता है जिसे कन्यादान 'महादान' कहा जाता है, ताकि दूसरे का परिवार चले, वंश बढ़े। उस पर दहेज मांगना भीख नहीं तो क्या है ?

तथ्य और विश्लेषण – 5 मुख्य बिंदु:

- मजबूरी बनाम मानसिकता का भेद: फुटपाथ का भिखारी शारीरिक अपंगता के कारण मजबूर है। दहेज मांगने वाला शारीरिक रूप से सक्षम होते हुए भी मानसिक रूप से अपंग है। पहला पेट के लिए मांगता है, दूसरा प्रतिष्ठा और लालच के लिए।
- कन्यादान के बाद भी भीख क्यों ? भारतीय संस्कृति में कन्यादान को महादान कहा गया है। पिता अपना सर्वस्व दान कर देता है।



उसके बाद गाड़ी, नकद, फ्लैट मांगना दान पर दान नहीं, बल्कि वसूली है। यह सामाजिक भीख का सबसे बड़ा रूप है।

3. दहेज – एक सामाजिक अभिशाप का अर्थशास्त्र: एक गरीब पिता की 20 साल की कमाई, उसकी

4. असली भिखारी की पहचान: कहानी का तमाका यही है – हाथ फैलाकर मांगने वाला गरीब नहीं, सूट-बूट पहनकर, दहेज लिस्ट बनाकर मांगने वाला शिक्षित व्यक्ति ही सचमुच का भिखारी है। क्योंकि एक के पास विकल्प नहीं, दूसरे के पास चरित्र नहीं।

5. समाधान – जो प्राप्त है, पर्याप्त है: किरन का अंतिम संदेश ही इस लेख का सार है – जिसका मन मस्त है, उसके पास समस्त है। संतोष ही सबसे बड़ी पूंजी है। नई पीढ़ी को 'SIP करो मस्त रहो' की तरह ही जीवन में भी Systematic Investment of संस्कार करना होगा।

संपादकीय निष्कर्ष: परिवहन विशेष का मानना है कि सड़क पर चलने वाली गाड़ी अगर दहेज की भीख से आई है, तो वह कभी सुरक्षित नहीं हो सकती। वह गाड़ी नहीं, एक पिता के आँसुओं पर चलती है। समाज को तय करना होगा कि इज्जत किसकी करनी है – दहेज में गाड़ी लाने वाले दिनेश की या 100 रुपये देकर ईसानियत दिखाने वाली किरन की ?

कौन है सचमुच का भिखारी – यह फैसला अब समाज को करना है।

परिवहन व्यवसाय की चुनौतियों पर कोर ग्रुप की बैठक, सुचारु संचालन को लेकर बनी सहमति



दैनिक परिचालन, भाड़े में लचीलापन और व्यवसायिक सुविधाओं पर मंथन; विभिन्न उद्योगों को निर्बाध वाहन आपूर्ति बनाए रखने पर जोर

रिपोर्ट ड राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

स्थानीय परिवहन व्यवसाय से जुड़ी दैनिक चुनौतियों, परिचालन संबंधी समस्याओं और ट्रांसपोर्टर्स की व्यावहारिक जरूरतों पर विचार-विमर्श के लिए कोर ग्रुप की एक विशेष बैठक आयोजित की गई। बैठक में परिवहन क्षेत्र से जुड़े प्रमुख सदस्यों ने भाग लिया और बदलते कारोबारी माहौल में लचीली एवं व्यावहारिक कार्यणाली अपनाने पर आम सहमति व्यक्त की।

बैठक में विशेष रूप से भाड़े में आवश्यक लचीलापन, वाहनों के दैनिक परिचालन में आने वाली

कठिनाइयों, ड्राइवर एवं वाहन प्रबंधन, भुगतान व्यवस्था तथा विभिन्न औद्योगिक एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को समय पर वाहनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने जैसे मुद्दों पर गंभीर चर्चा हुई।

सदस्यों ने कहा कि इस्पात, निर्माण, औद्योगिक उत्पादन, कोयला और अन्य व्यापारिक गतिविधियों की आपूर्ति श्रृंखला को सुचारु बनाए रखने में ट्रांसपोर्टर्स की महत्वपूर्ण भूमिका है। ऐसे में परिवहन व्यवस्था में किसी भी तरह की बाधा का सीधा असर उद्योगों की उत्पादन क्षमता, माल की आवाजाही और स्थानीय बाजार की गतिविधियों पर पड़ सकता है। बैठक में इस बात पर जोर दिया गया कि व्यवसायिक हिੱतों और परिचालन की वास्तविक लागत के बीच संतुलन बनाए रखते हुए व्यावहारिक समाधान तलाशना आवश्यक है।

बैठक में चंदन बेहरा, मुनिंदर सिंह, जगन्नाथ पंडा, रमेश गोयल, राजेश जयसवाल सहित अन्य प्रमुख सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने परिवहन व्यवस्था को अधिक व्यवस्थित और निर्बाध बनाने के लिए आपसी समन्वय बढ़ाने तथा समस्याओं का संवाद के माध्यम से समाधान निकालने पर सहमति जताई।

आरजीटीए के अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव भी बैठक में उपस्थित रहे। उन्होंने परिवहन क्षेत्र की चुनौतियों और व्यवसाय के बदलते स्वरूप पर अपने विचार रखते हुए सामूहिक प्रयास और समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया। अंत में मुकेश रोले द्वारा धन्यवाद जापन के साथ बैठक का समापन किया गया और परिवहन व्यवस्था को आगे भी सुचारु रूप से संचालित करने के लिए आपसी सहयोग बनाए रखने का निर्णय लिया गया।

नई सड़क, पुराने सवाल: जगह-जगह गड्डों से बढ़ा हादसों का खतरा

बेदव्यास से फर्टिलाइजर तक सड़क की गुणवत्ता पर उठे गंभीर सवाल; थर्ड पार्टी ऑडिट और निर्माण सामग्री की स्वतंत्र जांच की मांग तेज



रिपोर्ट ड राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) की ओर से निर्मित सड़क के एक बड़े हिस्से में जगह-जगह गड्डे और क्षतिग्रस्त पैच सामने आने के बाद सड़क की गुणवत्ता और निर्माण

मानकों को लेकर गंभीर सवाल उठने लगे हैं। स्थानीय लोगों का आरोप है कि जिस सड़क को लंबे समय तक सुरक्षित और सुगम आवागमन का माध्यम बनना चाहिए था, वह निर्माण के कुछ समय बाद ही बार-बार मरम्मत की जरूरत वाली सड़क बन गई है।

बेदव्यास, देवागांव, कुआरमुंडा और फर्टिलाइजर सहित लगभग 100 किलोमीटर के हिस्से में 200 से अधिक क्षतिग्रस्त पैच होने का दावा किया जा रहा है। स्थानीय लोगों के अनुसार, इन स्थानों पर सड़क की खराब स्थिति के कारण कई दुर्घटनाएं हो चुकी हैं और अनेक लोगों को गंभीर चोटों तथा अंगहानि का सामना करना पड़ा है। दुर्घटनाओं के रिकॉर्ड भी इस मार्ग की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े करते हैं।

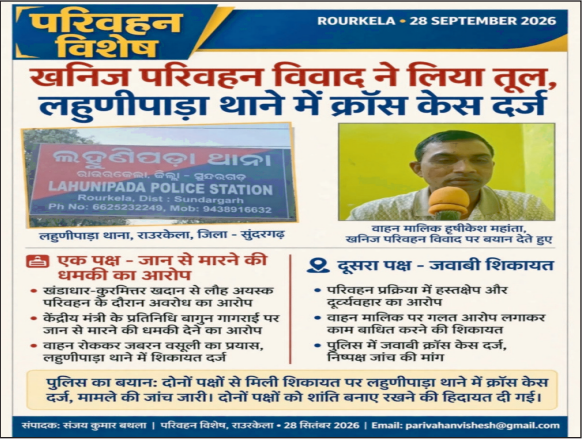
थाने के सामने की सड़क भी सवाल को घेरे में चिता की बात यह है कि पुलिस थाने जैसे संवेदनशील और सार्वजनिक स्थानों के सामने का सड़क हिस्सा भी कथित रूप से दुर्घटना का कारण बन रहा है। कई बार मरम्मत किए जाने के बावजूद सड़क पर नए

खनिज परिवहन विवाद ने लिया तूल, लहुणीपाड़ा थाने में क्रॉस केस दर्ज

खंडाधार – कुरमिटर लौह अयस्क खदान से परिवहन को लेकर विवाद; केंद्रीय मंत्री के प्रतिनिधि समेत दो पक्षों की शिकायत पर पुलिस ने दर्ज किए मामले रिपोर्ट ड राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

सुंदरगढ़ जिले के खनिज बहुल क्षेत्र में लौह अयस्क परिवहन को लेकर शुरू हुआ विवाद अब पुलिस थाने तक पहुंच गया है। खंडाधार-कुरमिटर लौह अयस्क खदान से खनिज परिवहन को लेकर कथित विवाद में केंद्रीय मंत्री जुएल ओराम के प्रतिनिधि बताए जा रहे बागुन गागराई और वाहन मालिक हृषीकेश महांता के बीच मामला दर्ज होने के बाद क्षेत्र में चर्चा तेज हो गई है।

एक पक्ष ने लगाया जान से मारने की धमकी का आरोप प्राप्त शिकायत के अनुसार, वाहन मालिक हृषीकेश महांता ने लहुणीपाड़ा थाने में शिकायत दर्ज कराते हुए आरोप लगाया कि बागुन गागराई और उनके दो सहयोगियों ने उन्हें कथित तौर पर जान से मारने की धमकी दी। शिकायत के आधार



पर पुलिस ने बागुन गागराई और उनके सहयोगियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू की है। जवाबी शिकायत पर दूसरे पक्ष के खिलाफ भी केस इसी मामले में बागुन गागराई की ओर से भी पुलिस के समक्ष जवाबी शिकायत दर्ज कराई गई। उनको शिकायत के आधार पर पुलिस ने हृषीकेश महांता के खिलाफ भी मामला दर्ज किया है। इस तरह विवाद ने क्रॉस केस का रूप ले लिया है और पुलिस दोनों पक्षों की शिकायतों की अलग-अलग जांच कर रही है।

हृषीकेश महांता ने कथित खतरे का हवाला देते हुए पुलिस से अपने और अपने परिवार के लिए सुरक्षा की मांग भी की है। पुलिस का कहना है कि दोनों मामलों में प्राप्त शिकायतों और उपलब्ध तथ्यों की जांच की जा रही है।

फिलहाल पुलिस जांच पूरी होने के बाद भी पुलिस के वास्तविक परिस्थितियों और आरोपों की पुष्टि हो सकेगी। दोनों पक्षों के आरोपों को लेकर किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले जांच के परिणाम का इंतजार किया जा रहा है।



पैच और गड्डे उभरने की शिकायतें सामने आ रही हैं। निर्माण सामग्री की गुणवत्ता की जांच की मांग स्थानीय नागरिकों और सड़क उपयोगकर्ताओं ने निर्माण के कथित रूप से घटिया अथवा मानक से कम गुणवत्ता वाली सामग्री के इस्तेमाल की स्वतंत्र जांच की मांग की है। उनका कहना है कि केवल बार-बार पैचवर्क समस्या का स्थायी

समाधान नहीं है। परिवहन व्यवसायियों, यात्रियों, छात्रों, मजदूरों और आम नागरिकों के लिए महत्वपूर्ण इस मार्ग को लेकर अब थर्ड पार्टी क्वालिटी एवं सेफ्टी ऑडिट की मांग तेज हो गई है। साथ ही निर्माण सामग्री के नमूनों की स्वतंत्र प्रयोगशाला जांच, निर्माण प्रक्रिया और गुणवत्ता नियंत्रण रिकॉर्ड की समीक्षा तथा दुर्घटना-प्रवण हिस्सों का

तकनीकी निरीक्षण कराने की मांग उठ रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि सड़क की गुणवत्ता पर लगाए जा रहे आरोपों की निष्पक्ष जांच के लिए स्वतंत्र एजेंसी से ऑडिट कराया जाना चाहिए। जांच के निष्कर्षों के आधार पर यदि किसी स्तर पर मानकों के उल्लंघन की पुष्टि होती है तो जिम्मेदारी तय कर कार्रवाई की जानी चाहिए।

कोइड़ा में ₹50 करोड़ की जमीन पर गंभीर सवाल, राजस्व अधिकारी और रिश्तेदारों के नाम पर खरीद का आरोप

प्रस्तावित खनन-औद्योगिक परियोजना से पहले जमीन खरीदने और कथित पूर्व जानकारी के इस्तेमाल के आरोप; पीएमओ में शिकायत के बाद मामला अब उपजिलाधिकारी, बनई के कार्यालय में लंबित

रिपोर्ट ड राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र कोइड़ा

सुंदरगढ़ जिले के खनिज बहुल कोइड़ा क्षेत्र में जमीन की खरीद-बिक्री को लेकर गंभीर सवाल उठे हैं। आरोप है कि राजस्व विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी और उनके रिश्तेदारों के नाम पर विभिन्न गांवों में बड़ी मात्रा में जमीन खरीदी गई, जिसकी अनुमानित कीमत करीब ₹50 करोड़ बताई जा रही है।

शिकायतकर्ता राजकुमार यादव ने इस मामले को लेकर प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) में शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत के बाद मामला विभिन्न संबंधित कार्यालयों से

गुजरते हुए वर्तमान में उपजिलाधिकारी, बनई के कार्यालय में जांच के लिए लंबित बताया जा रहा है। शिकायत में आरोप लगाया गया है कि कोइड़ा तहसील में लंबे समय से पक्कय राजस्व अधिकारी को प्रस्तावित खनन एवं औद्योगिक परियोजनाओं से संबंधित जानकारी पहले से उपलब्ध थी। इसी कथित जानकारी के आधार पर थेरई, डेंगुला, काशिरा और बालडिही सहित विभिन्न गांवों में अपेक्षाकृत कम कीमत पर जमीन खरीदने का आरोप लगाया गया है।

₹185 करोड़ के मुआवजे के बीच ₹50 करोड़ की जमीन पर सवाल मामले का एक महत्वपूर्ण पहलू प्रस्तावित परियोजना से जुड़ा करीब ₹185 करोड़ के मुआवजे का बताया जा रहा है। शिकायतकर्ता ने सवाल उठाया है कि यदि अधिकारी अथवा उनके परिजनों के नाम पर करीब ₹30 करोड़ मूल्य की जमीन है, तो इन जमीनों की खरीद का समय, स्रोत, लेन-देन और संभावित परियोजना संबंधी पूर्व जानकारी की स्वतंत्र जांच क्यों न की जाए।

आदिवासी परिवारों की जमीन को लेकर भी सवाल आरोपों में यह भी कहा गया है कि संबंधित

क्षेत्र के कई भूमि मालिक आदिवासी समुदाय से हैं। शिकायत में आशंका जताई गई है कि कुछ भूमि मालिकों को अपनी जमीन के भविष्य के संभावित मूल्य और प्रस्तावित परियोजनाओं के प्रभाव की पूरी जानकारी नहीं रही होगी। शिकायत में खतियान, बिक्री विलेख, म्यूटेशन रिकॉर्ड, भूमि हस्तान्तरण, संपत्ति विवरण और संबंधित अधिकारियों द्वारा दाखिल वार्षिक संपत्ति घोषणाओं की जांच की मांग की गई है। जांच से सामने आएगा सच मामले में सुंदरगढ़ कलेक्टर डॉ. शुभांकर महापात्रा द्वारा बोनई उपजिलाधिकारी को जांच के निर्देश दिए जाने की बात सामने आई है। वहीं, संबंधित तहसीलदार ने रिश्तेदारों के नाम पर जमीन खरीदने के आरोप से इनकार किया है।

फिलहाल आरोपों की स्वतंत्र जांच के लिए है। इसलिए मामले में वास्तविक स्थिति जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट होगी। अब निम्न उपजिलाधिकारी, बोनई की जांच पर हैं कि भूमि खरेद, कथित पूर्व जानकारी, संपत्ति विवरण और प्रस्तावित परियोजना से जुड़े मुआवजे के बीच कोई वास्तविक संबंध सामने आता है या नहीं।



